SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-01| September- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

# आत्मनिर्भर भारत में महिलाओं की भूमिका

**डॉ० कमलकान्त**
सहायक आचार्य
शिक्षक–शिक्षा विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, सिविल लाइन्स, कानपुर नगर

***शोध सारांश***

*नारी के महान अनुदान एवं योगदान के कारण प्राचीन भारत समृद्ध संपन्न एवं अति विकसित था। प्राचीन काल में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग किया। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विकास के साथ–साथ समाज, राजनीति, धर्म, कानून, संगठन आदि सर्वांगीण उन्नति एवं उत्थान में पुरुष की सच्ची सहचरी बनकर रही भारतीय प्रगति का दीर्घ एवं लंबा इतिहास नारी के बिना अधूरा एवं अपूर्ण रह जाता, यदि नारी इसमें कोई योगदान नहीं देती। पुरुष को नारी द्वारा दी गई प्राणदायी प्रेरणा के बल पर ही भारतीय विकास का आधार खड़ा हो सका।*[1]

*आत्मनिर्भरता मानव जीवन का एक ऐसा सद्गुण है, जिसकी प्राप्ति से व्यक्ति का जीवन सुगम एवं सरल हो जाता है। एक आत्मनिर्भर व्यक्ति अपने कर्म की कुशलता से आत्मनिर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण के साथ–साथ राष्ट्र का भी निर्माण करता है। व्यक्ति की आत्मनिर्भरता स्वावलंबी बना देती है। यदि कोई व्यक्ति स्वयं आत्मनिर्भर रहता है तो उसे किसी और के सहारे की जरूरत नही पड़ती है। हमारा भारत देश विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ था, जिसे जगतगुरु की संज्ञा दी गयी थी। यही कारण था कि वैदिक काल में कन्याओं को शुभ तथा विशेष शक्ति प्राप्त थी. भारतीय महिलाओं के समक्ष जाति प्रथा, धार्मिक परम्पराओं, प्राचीन प्रचलित भूमिकाओं जैसी अन्य चुनौतियाँ तो हैं ही, साथ ही उसे पहले से अधिक मजबूत भारतीय समाज के पुरूष सतात्मक ताने–बाने से भी लोहा लेना है। आज भी इसी चीज की आवश्यकता है। समाज में नारी के विकास के लिए समुचित व्यवस्थाएं की जानी चाहिए. सभी तरह के प्रतिबंध हटाए जाने चाहिए. उनके संदर्भ में अपनी मानसिकता एवं दृष्टिकोण को परिवर्तित एवं परिष्कृत किया जाना चाहिए, जिससे कि वे अपने बहुआयामी व्यक्तित्व को विकसित कर सकें। नारी के विकास से ही भारत अपनी प्रतिष्ठा सम्मान गौरव गरिमा को पुनः प्राप्त कर सकता है। आत्मनिर्भर बनने के लिए अर्थव्यवस्था, तकनीकी, इन्फ्रास्ट्रक्चर, मांग को विकसित करना होगा तभी जाकर नये भारत का सपना साकार हो सकेगा तथा महिलाओं का विकास हो सकेगा।*

***कीवर्ड–*** *आत्मनिर्भर, महिला, सशक्तिकरण, डिजीटलीकरण,चुनौतियाँ,योगदान*

**प्रस्तावना**

प्राचीन काल में भारतीय समाज को विश्व में सर्वाधिक सम्मान प्राप्त था। इसके पीछे नारियों का अमूल्य सहयोग, सहकार एवं आत्म निर्भरता की भावना सन्निहित रही है। ज्ञान के क्षेत्र में हो या समाज के क्षेत्र में, हर स्थिति में महिलाएं

अनादि काल से ही आत्मनिर्भर होकर पुरुषों के समान रही हैं। अनेक वेद मंत्रों के अवतरण में ऋषियों के ही नहीं, ऋषिकाओं के भी नाम मिलते हैं। नर और नारी को एक समान मानकर समान ऋषि पद प्राप्त होता था। उनके गंभीर ज्ञान से समाज सुपरिचित था।[2]

आत्मनिर्भर भारत अर्थात एक ऐसे भारत की कल्पना, जो किसी पर आश्रित न होकर स्वावलंबी हो. आत्मनिर्भरता मानव जीवन का एक ऐसा सद्गुण है, जिसकी प्राप्ति से व्यक्ति का जीवन सुगम एवं सरल हो जाता है। एक आत्मनिर्भर व्यक्ति अपने कर्म की कुशलता से आत्मनिर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण के साथ–साथ राष्ट्र का भी निर्माण करता है। व्यक्ति की आत्मनिर्भरता स्वावलंबी बना देती है. यदि कोई व्यक्ति स्वयं आत्मनिर्भर रहता है तो उसे किसी और के सहारे की जरूरत नही पड़ती है। हमारा भारत देश विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ था, जिसे जगतगुरु की संज्ञा से सुशोभित किया गया था। यही कारण था कि वैदिक काल में कन्याओं को शुभ तथा विशेष शक्ति प्राप्त थी।[3] मनुस्मृति में कहा गया है कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।'' अर्थात् "जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नही होती है, उनका सम्मान नहीं होता है, वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं।''

साहस, शौर्य, पराक्रम के अलावा भी नारियां ज्ञान विज्ञान और आध्यात्मिक प्रतिभा के क्षेत्र में अग्रणी थीं।[5] वृद्धारान्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य एवं मैत्रेयी का संवाद आता है, जिससे मैत्रेयी के मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास की उच्चावस्था का भान होता है।[6] महाभारत शांति पर्व के अनुसार कार्य सदृश न तो कोई बंधु है और न हीं धर्म संग्रह में अन्य कोई सहायक 'गृहिणी गृहमुच्यते' वैदिक युग में नारियों को यह रास्ते में अत्यंत महत्वपूर्ण बताया गया है।[7] नारी वस्तुतः परिवार की केंद्र बिंदु मानी जाती थी परिवार का मंगल सौभाग्य एवं कल्याण सब कुछ उस पर आधारित था।[8] महाभारत के आदिपर्व एवं वनपर्व[9] के अनुसार नारी सदा आदर की पात्र है, इसलिए उसे दारा कहा गया। शतपथ ब्राह्मण[10] में वर्णन आता है कि स्त्रियां साम गान करती थी. वह घरेलू शिक्षा के प्रति भी सचेत भी तथा अपने व्यक्तित्व को आत्मनिर्भर हेतु प्रत्येक दृष्टि से विकसित करती थी।[11]

**महिलाओं की भूमिका**

पुरातन काल के गौरवमयी सतयुगी समाज का श्रेय नारियों की उच्च स्थिति को दिया जाता रहा है। नारियों को हर स्तर पर सम्मान एवं श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था। उन्हें पुरुषों के समान अवसर उपलब्ध थे एवं वे हर क्षेत्र में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते थीं। गृहकार्यों से लेकर कृषि, प्रशासन एवं यज्ञ से लेकर अध्यात्म साधना तक के कोई भी क्षेत्र उनके विशिष्ट व्यक्तित्व प्रतिभा एवं कौशल की छाप से अछूते नहीं थे।[12] उन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त था. अपनी बहुआयामी उपलब्धियों के आधार पर वे अपनी जाति के अंदर संजीवनी शक्ति का संचार करती थीं और अपने समाज व राष्ट्र को सशक्त एवं ऊंचा उठाने में अपना अमूल्य योगदान देती थीं।[13] प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक भारत में महिलाओं की भूमिका का इतिहास काफी महत्वपूर्ण एवं गतिशील रहा है।

भारत वर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में आज भी प्रमुख स्थान है। वैदिक ग्रंथों के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि तब समाज में स्वतंत्रता एवं समानता की भावना ओतप्रोत थी। ग्रामीण परिदृश्य में महिलाओं की बड़ी आबादी है। दुर्भाग्यवश विदेशी शासनकाल में समाज में अनेक कुरीतियां व विकृतियां पैदा हुई, जिससे महिलाओं को उत्पीड़न हुआ। आजादी के बाद महिलाओं का समाज में सम्मान बढ़ा लेकिन उनके सशक्तिकरण की गति दशकों तक धीमी रही। गरीबी व निरक्षरता महिलाओं की प्रगति में गंभीर बाधा रही हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हें आर्थिक रूप से सुदृढ़

किया जा सकता है। विशेषकर कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है। भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, ''हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं।''[14] अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाईफुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण स्थापित किए है।[15]

इस धरती को मानवता के लिए स्वर्ग समान बनाने के लिए भारत सतत विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ चला है। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण करना सतत विकास लक्ष्यों में एक प्रमुख है। वर्तमान में प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है। महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। ''प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।'' इसलिए, यह इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम ''एक स्थायी कल के लिए आज लैंगिक समानता'' है।

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है आनंदीबाई गोपालराव जोशी[18] (1865–1887) पहली भारतीय महिला चिकित्सक थीं। सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में अपनी छाप छोड़ी हरियाणा की संतोष यादव[19] ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया। बॉक्सर एमसी मैरी कॉम एक जाना–पहचाना नाम है। हाल के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ और नामचीन महिलाएं हैं, जिन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।[20]

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई 2020 को देश में उद्यमिता एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए आत्मनिर्भर भारत की योजना[21] शुरू की। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए स्टैंड अप इंडिया, और स्टार्ट–अप सम्बन्धि कई योजनाएं शुरू की हैं। अब एक महिला उद्यमिता मंच पोर्टल का गठन करना एक प्रमुख पहल है, जो नीति आयोग की एक प्रमुख पहल है। यह अपनी तरह का पहला एकीकृत पोर्टल है जो विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि की महिलाओं को एक पटल देता है और उन्हें कई प्रकार के संसाधनों की सुविधा प्रदान करता है। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएं न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती में को भी योगदान दे रही है। आज देश भर में 70 लाख स्वयं सहायता समूह हैं।[22] निःसंदेह महिलाओं के पराक्रम ने भारत को आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से अग्रसर कर रहा है। आत्मनिर्भर भारत में कोविड–19 के दौरान कोरोना योद्धाओं के रूप में महिलाओं डाक्टरों, नर्सों, आशा वर्करों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की प्रवाह न करते हुए मरीजों को सेवाएं दी हैं। भारत बायोटेक की संयुक्त एमडी सुचित्रा एला[23] को स्वदेशी कोविड –19 वैक्सीन कोवैक्सिन विकसित करने में उनकी शानदार भूमिका के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। सचमुच महिलाएं और लड़कियां समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की अग्रदूत हैं।

देश बदल रहा है महिलाओं की दशा में सुधार आ रहा है, समय के साथ–साथ नारी शक्ति और सशक्त होती जा रही है। ''परिवर्तन प्रकृति का नियम है'' ये बात तो सत्य है, किन्तु परिवर्तन का क्या परिणाम हुआ है और क्या होगा और उस परिवर्तन को आने वाली पीढ़ी किस प्रकार स्वीकार करती है और इससे क्या सीख लेती है, ये बात अधिक महत्त्व रखती है। देखा जाए तो हर युग में प्रतिभाशाली महिलाएँ रही हैं और हर युग में उन्होंने अपनी प्रतिभा का समाज में उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। जैसे– सीता, सावित्री, द्रौपदी, गार्गी आदि पौराणिक देवियों से लेकर रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्या बाई होल्कर, रानी चेनम्मा, रानी पद्मिनी, हाड़ी रानी आदि महान रानियों के साथ–साथ इंदिरा गाँधी, किरण बेदी से लेकर सानिया मिर्जा आदि आधुनिक भारत की महिलाओं ने भारत को विश्व भर में गौरवान्वित किया और महिलाओं ने धरती पर ही नहीं अपितु अन्तरिक्ष में भी अपना परचम लहराया है, जिनमें सुनीता विलियम्स और कल्पना चावला[24] प्रमुख हैं।

महिलाओं का विकास देश का विकास है। यह सही है कि हर युग में महिलाओं ने अपनी योग्यता का परचम लहराया है, लेकिन फिर भी यह देखने को मिलता है कि हर युग में उन्हें भेदभाव और उपेक्षा का भी सामना करना पड़ा है। महिलाओं के प्रति भेदभाव और उपेक्षा को केवल साक्षरता और जागरूकता पैदा कर ही खत्म किया जा सकता है। महिलाओं की साक्षरता, उनकी जागरूकता और उनकी उन्नति ना केवल उनकी गृहस्थी के विकास में सहायक साबित होती है बल्कि उनकी जागरूकता एवं साक्षरता देश के विकास में भी अहम् भूमिका निभाती है। महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना और अन्याय के प्रति आवाज उठाने की हिम्मत प्रदान ही असल में नारी सशक्तिकरण है।

महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और सक्षम बनाना बहुत आवश्यक है। आर्थिक रूप से सक्षम होना केवल परिवार के लिए नहीं अपितु अपने लिए भी आवश्यक है। शिक्षा का महत्त्व तब पता चलता है, जब परिवार आर्थिक संकट से गुजर रहा हो या किसी भी लड़की के वैवाहिक जीवन में अचानक परेशानी आ जाए। तब शिक्षा और आत्म निर्भरता से ही एक लड़की को ना तो अपने माता पिता पर और ना ही अपने पति पर निर्भर रहना पड़ता है। पैसे से खुशियां नहीं खरीदी जा सकती लेकिन एक सम्मानजनक जीवन जीने के लिए के लिए धन की आवश्यकता जरुर होती है।

पिछले कुछ सालों में महिलाएँ कई क्षेत्रों में आगे आयी हैं। उनमें नया आत्मविश्वास पैदा हुआ है। अब हर वैसा क्षेत्र जहाँ पहले केवल पुरुषों का ही वर्चस्व था, वहाँ स्त्रियों को काम करते देखकर हमें आश्चर्य नहीं होता है। महिलाओं को काम करते देखना हमारे लिए अब आम बात हो गई है। महिलाओं में इतना आत्मविश्वास पैदा हो गया है कि वे अब किसी भी विषय पर बेझिझक बात करती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अब कोई भी क्षेत्र महिलाओं से अछूता नहीं रहा है।

**चुनौतियाँ**

इधर कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ हो रहे अपराधों में वृद्धि हुई है. घर से बाहर ही नहीं बल्कि घर में भी महिलाओं के साथ आपराधिक घटनाओं के साथ ही घरेलू हिंसा और यौन अपराधों में वृद्धि हो रही है। पर्दे में या दरवाजों के भीतर महिलाओं को बन्दिनी बनाकर रखना इन सबका हल नहीं है। जरूरत है उन बंद दरवाजों को खोलने की रोशनी को अंदर आने देने की उस प्रकाश में अपना प्रितिबिम्ब देखने की उसे निहारने की, निखारने की।

भारतीय महिलाओं के समक्ष जाति प्रथा, धार्मिक परम्पराओं, प्राचीन प्रचलित भूमिकाओं जैसी अन्य चुनौतियाँ तो हैं ही, साथ ही उसे पहले से अधिक मजबूत भारतीय समाज के पुरुष सतात्मक ताने–बाने से भी लोहा लेना है। अब वे

महिलाएँ नहीं हैं जो स्वयं पर हुए अत्याचारों और असुरक्षा का वर्णन करने वाली पुस्तकों की रचना करती थी, आज की भारतीय नारी की रचनाओं को पुलित्जर पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है, जो आकांक्षी पुरुष लेखकों को यह बताने के लिए पर्याप्त है कि कितनी प्रतिभाशाली तथा क्षमतावान हैं।

**उपसंहार**

किसी भी समाज एवं राष्ट्र की स्थिति को वहां की नारियों की दशा को देखकर आंका जाता है। आत्मनिर्भर भारत के विकास एवं प्रगति में आदर्शवादी नारियों ने अपनी प्रतिभा क्षमता और योग्यता का योगदान दिया। नारियां स्वयं का विकास करते हुए समाज को भी उन पुष्पित क्षमताओं से लाभान्वित करती थीं। आज भी इसी चीज की आवश्यकता है। समाज में नारी के विकास के लिए समुचित व्यवस्थाएं की जाएं, सभी तरह के प्रतिबंध हटाया जाए, उनके संदर्भ में अपने मानवता एवं दृष्टिकोण का परिवर्तित एवं परिष्कृत किया जाए, जिससे कि वे अपने बहुआयामी व्यक्तित्व को विकसित कर सकें। नारी के विकास से ही भारत अपनी प्रतिष्ठा सम्मान गौरव गरिमा को पुनः प्राप्त कर सकता है। महिला सशक्तिकरण तभी संभव है जब आत्मनिर्भरता और आर्थिक आत्मनिर्भरता भी हो। महिलाओं को जरूरत है अपने अस्तित्व को पहचानने की और इसको बनाये रखने की और एक कदम बढ़ाने की।

ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ शिक्षा के अभाव और आर्थिक पिछड़ेपन के और विकृत मानसिकता के कारण विभिन्न आडम्बरों एवं अन्धविश्वासों के चलते महिलाओं का शोषण किया जाता है। ऐसे स्थानों पर महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाना चाहिये एवं आत्मरक्षा के तरीके भी सिखाये जाने चाहिये। पुरुषों की भाँति महिलाएँ भी देश की समान नागरिक हैं और उन्हें भी स्वावलम्बी होना चाहिये ताकि समय आने पर वह व्यवसाय कर सकें और अपने परिवार को चलाने में मदद कर सकें। यही जागरूकता ही तो उनके, उनके परिवार के व देश के विकास को गति देगी एवं एक नई दिशा देगी।

**सन्दर्भ सूची**


1. अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका– नवम्बर 2024, पृष्ठ 16
2. अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका नवम्बर 2024, पृष्ठ 17
3. ऋग्वेद– 9/1/6
4. मनुस्मृति– 3/56
5. अखंड ज्योति मासिक पत्रिका नवंबर 2024, पृष्ठ 16
6. वृद्धारान्यक उपनिषद्–2/4
7. महाभारत शांति पर्व 144/61
8. महाभारत आदिपर्व – 74/31
9. महाभारत वनपर्व– 12/70
10. शतपथ ब्राह्मण–5/2/1/10
11. तैतिरीय संहिता– 5/7
12. ऋग्वेद– 8/81/5–13
13. ऋग्वेद– 1/135/7 वि सृतृता ददृशे रीयते धृतं
14. https://www.cram.com/essay/Rabindranath-Tagores-Role-Of-Women-Empowerment-In
15- श्री बंडारू दत्तात्रेय, माननीय राज्यपाल, हरियाणा https://haryanarajbhavan.gov.in/hi/publication.

16. https://haryanarajbhavan.gov.in/hi/publication

17 https://give.brighamandwomens.org/stories/2016-1606agpb-bwh-magazine-empowering-young-parents- eliminating-disparities/

18. https://en.wikipedia.org/wiki/Anandi Gopal Joshi

19. https://en.wikipedia.org/wiki/Santosh Yadav

20. https://haryanarajbhavan.gov.in/hi/publication

21. https://hindi.nvshq.org/aatm-nirbhar-bharat-abhiyan

*22. https://hivikaspedia in social-welfare*

23. https://www.thehindubusinessline.com/news/vaccine-makers-krishna-suchitraella-cyrus-poonawalla- awarded-padma-bhushan/

24 https://economictimes.indiatimes.com/magazines/panache/how-kalpana-chawla-sunita-williams-amp-other-women-across-the-world-fared-in-**space**

***Cite this Article:***

डॉ० कमलकान्त, "आत्मनिर्भर भारत में महिलाओं की भूमिका" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 01, pp.149-154, September 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

# CERTIFICATE

## of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

डॉ० कमलकान्त

**For publication of research paper title**

"आत्मनिर्भर भारत में महिलाओं की भूमिका"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-01, Month September 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/